सात कौवे

ग्रिम ब्रदर्स

छोटी लड़की के जन्म के बाद पिता ने अपने सात
लड़कों को उसके नामकरण के लिए पानी लाने भेजा.
लड़कों को बहुत देर लगाई और पिता उन पर क्रोधित हुए.
गुस्से में उन्होंने कहा कि उनके लड़के कौवों में बदल
जाएं और उनकी यह इच्छा तुरंत पूरी भी हुई.
बड़े होने पर, बहन को अपने भाईयों के भाग्य के बारे में पता
चला, और वो उन्हें ढूंढने के लिए पृथ्वी के हर छोर पर गई.
लड़की ने अपने भाइयों को मुक्त कराने के लिए तमाम
मुश्किलें सहीं पर उसने उम्मीद नहीं छोड़ी.

एक आदमी के सात बेटे थे लेकिन कोई बेटी नहीं थी. अंत में उसकी पत्नी फिर से गर्भवती हुई, और जब नया बच्चा दुनिया में आया, तो वो सच में एक लड़की निकली. दंपत्ति को बहुत आनंद हुआ. लेकिन बच्ची नाजुक और छोटी थी. उसकी कमजोरी के कारण पिता ने तुरंत उसका नामकरण करने की सोची.

पिता ने एक लड़के को नामकरण के लिए पानी लाने के लिए कुएं पर भेजा. बाकी छह लड़के भी उसके साथ गए. पर जब उन्होंने पानी खींचने की कोशिश की, तो उनका घड़ा कुएं में गिर गया. वे सब वहीं खड़े रहे. वो क्या करें यह उन्हें समझ में नहीं आया और घर जाने की उनमें से किसी की हिम्मत नहीं हुई.

जब लड़के वापस नहीं आए, तो पिता बहुत गुस्सा हुए. "क्या उन लड़कों ने फिर से खेलना शुरू कर दिया और मैंने उन्हें जिस काम के लिए भेजा था उसे वे भूल गए." पिता बहुत दुखी हुए. उन्हें लगा कि कहीं उनकी बेटी नामकरण के बिना ही गुज़र न जाए. तब उन्होंने कहा, "काश, वे लड़के कौवों में बदल जाते." जैसे ही उन्होंने यह कहा उन्हें आसमान में चीख-पुकार सुनाई दी और सात काले कौए उनके सिर के ऊपर से उड़े.

माता-पिता अब अपनी इच्छा को बदल नहीं सकते थे. अपने सात बेटों के नुकसान से वे अत्यंत दुखी हुए. कैसे करके वो अपनी प्यारी छोटी बेटी के प्रेम के कारण ज़िंदा रह पाए. धीरे-धीरे बेटी ने ताकत हासिल की और वो हर दिन और अधिक सुंदर हुई. एक लंबे अर्से तक उस लड़की को इस बात का कोई इल्म नहीं था कि उसके भाई भी थे, क्योंकि माता-पिता ने उसके सामने उनका कभी ज़िक्र ही नहीं किया था. फिर एक दिन, संयोग से, लड़की ने लोगों को उसके भाईयों के बारे में बात करते हुए सुना. लोगों को लड़की बहुत सुंदर लगी. लेकिन उन्होंने लड़की को उसके सात भाइयों के दुर्भाग्य के लिए दोषी ठहराया. यह सुनकर लड़की बहुत दुखी हुई और उसने अपने माता-पिता से इस बारे में पूछा. माता-पिता अब उस रहस्य को छिपा नहीं सकते थे. उन्होंने लड़की को सब कुछ बताया और कहा कि जो कुछ हुआ वो भगवान का फैसला था और उसका जन्म उनके लिए एक ख़ुशी का अवसर था.

युवती ने जो कुछ सुना हर दिन वो उस पर अकेले विचार करती रही. फिर उसने अपने भाइयों को मुक्त कराने का निर्णय लिया. उसे तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक वो अपने भाइयों को ढूंढकर उन्हें मुक्त नहीं कराएगी. वो हर तकलीफ झेलेगी और पूरी दुनिया में तब तक खोजेगी जब तक वो अपना मिशन पूरा नहीं करती. बतौर यादगार उसने अपने साथ अपने माता-पिता की एक छोटी अंगूठी ली. उसने खाने के लिए रोटी, प्यास के लिए एक जग पानी और आराम करने के लिए एक छोटी सी कुर्सी के अलावा और कुछ नहीं लिया.

फिर युवती भागती हुई सितारों के पास पहुंची. उन्होंने दोस्ताना ढंग से उसका स्वागत किया. प्रत्येक सितारा अपनी-अपनी छोटी कुर्सी पर बैठा. फिर सुबह का तारा खड़ा हुआ और उसने उस लड़की को एक छोटी सी हड्डी दी और कहा. "जब तक तुम्हारे पास यह छोटी हड्डी नहीं होगी, तब तक तुम कांच के उस पहाड़ को नहीं खोल पाओगी जहाँ तुम्हारे भाई रहते हैं."

युवती ने छोटी हड्डी ली, और उसे अच्छी तरह से अपने रुमाल में लपेटा, और फिर कांच के पहाड़ तक गई. वहां का दरवाजा बंद था. पर जैसे ही उसने हड्डी निकालने के लिए रुमाल को खोला, तो हड्डी गायब थी. वह एक अच्छे सितारे का उपहार खो चुकी थी. अब वो क्या करे? वो अपने भाइयों को बचाना चाहती थी पर उसके पास कांच के पहाड़ की कोई चाबी नहीं थी. फिर अपनी उंगली को उसने चाभी जैसे अटकाया और उससे आराम से ताला खुल गया. जब वो अंदर गई तो एक बौना उससे मिलने आया और उसने पूछा, "मेरी बेटी, तुम क्या ढूंढ रही हो?"

"मैं अपने भाइयों - सात कौवों की तलाश कर रही हूं," उसने कहा.

बौने ने कहा, "देखो वो सात कौवे अभी घर पर नहीं हैं, लेकिन अगर तुम उनके लौटने तक इंतजार करना चाहती हो, तो अंदर आओ."

फिर बौना सात छोटी प्लेटों और सात छोटे कपों में सात कौवों का भोजन लाया. प्रत्येक प्लेट में से बहन ने एक छोटा टुकड़ा खाया, और प्रत्येक कप में से उसने एक घूंट पी. आखिरी कप में उसने अपने साथ लाई अंगूठी गिरा दी.

अचानक हवा में चीख-पुकार मची. बौने ने कहा, "सातों कौवे अब घर लौट रहे हैं."

आने के बाद उन्होंने खाने और पीने की इच्छा ज़ाहिर की और अपने-अपने कप, प्लेट मांगे. फिर एक के बाद एक करके कौवों ने कहा. "मेरी प्लेट में से किसी ने कुछ खाया है? मेरे कप में से किसी ने कुछ पिया है? और जिसने ऐसा किया है वो एक इंसान है."

और जब वो सातवें कप पर आए, तो उन्हें उसमें पड़ी छोटी अंगूठी दिखाई दी. उन्होंने तुरंत पहचान लिया कि वो उनके माता-पिता की अंगूठी थी. फिर उन्होंने कहा, "शायद ईश्वर की कृपा से हमारी छोटी बहन यहाँ आई है. उसकी खातिर अब हमें स्वतंत्र होना चाहिए!"

युवती दरवाजे के पीछे छिपकर खड़ी थी. जब उसने कौवों की यह इच्छा सुनी तो वो बाहर आई. सभी कौवों ने अपना मानव रूप फिर से प्राप्त किया. फिर वे गले लगे और उन्होंने एक-दूसरे को चूमा और खुशी-खुशी अपने घर गए.

समाप्त